ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

भारत में कार्यरत महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन

डॉ0 नमिता श्रीवास्तव*

"पवित्र और सतीत्व तो भारतीय नारी की वह बहुमूल्य विधि है जो उसे अतीत काल से परम्परा से प्राप्त हुई। इसलिए स्वभावतः वह उसे समझती है। सर्वप्रथम, हमें उनमें इस आदर्श के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न करनी चाहिए। यदि वे इस आदर्श पर दृढ़ हो गयी, तो इसके फलस्वरूप उनका चरित्र इतना बलवान और दृढ़ होगा कि उसके प्रभाव वे अपने प्राणों की आहुति देकर भी अपने पवित्र एवं सतीत्व की रक्षा करना अपना धर्म समझेगी चाहे वे विवाहित हो अथवा अविवाहित रहने का ध्रुव–संकल्प धारण किये हो।" (स्वामी विवेकानन्द)

हमारे देश में महिलाओं की स्थिति संस्कृति धर्म एवं कालानुसार निर्धारित है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति समय–समय पर परिवर्तित होती रही है। सभ्यता के विभिन्न चरणों में महिलाओं के स्थान को विभिन्न रूपों में एवं अर्थों में व्यक्त किया जाता रहा।

भारतीय महिलाओं की कालातीत प्रगति ने सम्पूर्ण विश्व में यह सिद्ध कर दिया है कि वह सर्वथा अपनी योग्यता में शासन प्रशासन को सफलतापूर्वक संचालित कर सकती है। जबकि उनकी पराजय विश्व का युगान्तर से प्रचलित रूचि का विषय रहा है। किसी भी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक नियमों के स्तर का मूल्यांकन वहाँ पर महिलाओं की स्थिति से किया जा सकता है।

मानव जीवन में महिलाओं की भूमिका का नैतिक मूल्यांकन उनके स्वयं के विकास के रूप में दृष्टिगत किया जा सकता है। भारत के स्वतंत्रता से पूर्व महिलाओं के संघर्ष पर तथा उनकी समय–समय पर भूमिका में परिवर्तन एवं स्वयं उनके प्रयासों एवं समाज के सहयोग से वह नवीन पहचान

* पी.एच.डी. (समाजशास्त्र), पूर्व प्रवक्ता, हीरा लाल यादव बालिका डिग्री कालेज, लखनऊ।

स्थापित कर उन्नति की ओर अग्रसर हुई।

शहर और गाँव की जनसंख्या के आधार पर 2011 में 80% शहरी महिलाऐं शिक्षित है जबकि 59% ग्रामीण महिलाऐं शिक्षित है।

महिलाओं ने उच्च शिक्षा के अन्तर्गत 45.9% पी.जी. की विद्यार्थी हैं जबकि 40.5% महिलाऐं पी.एच.डी. की विद्यार्थी है।

अब महिलाऐं परास्नातक की शिक्षा पूर्ण करने के बाद योग्यतानुसार महाविद्यालयों के अध्ययन को प्राथमिकता देती है। इस कार्य में जीवन शान्तिपूर्ण होता है। तथा कार्यशील माताऐं अपने बच्चों के प्रति भी भूमिका निर्वाह कर सकती है।

अल्पसंख्यक में अन्य व्हाइट कॉलर कार्यो में भी कार्यरत महिलाऐं जैसे ए.आई.आर. की उद्घोषिका, टेलिविजन, रेलवे स्टेशनों की उद्घोषिका, स्टोरकीपर, स्टेनोग्राफर, रिशेप्सनिष्ट आदि ये सभी कार्य प्रचलित नही है किन्तु कठिनता से प्राप्त कार्यो को छोड़ना भी असाध्य है।

15% कार्यरत महिलाऐं उच्च नौकरियाँ जैसे आई.ए.एस., आई.पी. एस., आई.आर.एस. आदि में भी सलंग्न है। ये सभी कार्यरत महिलाऐं सम्मानजनक वेतन प्राप्त कर स्वनिर्धारित व सुविधाजनक जीवनशैली को अपना रही है।

परम्परागत रूप में पुरूष आय को अर्जित कर परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नियुक्त था तथा महिलाऐं पूर्णतः उस पर आश्रित होती थीं। इस प्रकार वह अधीनस्थ एवं निर्णय लेने में परतंत्र थी किन्तु आधुनिक समय में महिलाऐं शिक्षित एवं परिवार के मुद्दों पर अपने विचार रखने के लिए स्वतंत्र है। आज जबकि महिलाऐं स्वयं आय अर्जित कर परिवार के व्यय में बराबर सहयोग दे रही है। वह शिक्षा वस्तुओं की खरीदारी बजट बनाने में अपने द्वारा प्रवृत्त निर्णय को सम्मिलित करने की भी इच्छुक हैं।

भारत में शिक्षित महिला का विवाह एवं कार्य दोनों ही सामाजिक रूचि एवं महत्व का विषय है विशेषता आधुनिक भारतीय शहरी परिक्षेत्र के

सन्दर्भ में महिलाओं का घर से बाहर कार्य करना कोई नवीन अवधारणा नही है बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में महिलाऐं पुरूषों के समान निर्माण कार्य में कारखानों आदि में लम्बे समय से कार्यरत है किन्तु

मध्यम वर्ग की महिलाओं द्वारा घर के अतिरिक्त कार्यो के रूप में कार्यरत होना एवं नवीन अवधारणा है जबकि महिलाऐं अपने घरों की चहारदीवारी से बाहर निकल कर लाभकारी क्षेत्रों में कार्यरत है यह स्थिति भारत में विगत तीन दशकों से सामाजिक राजनीति आर्थिक परिवर्तनों का ही परिणाम है।

भारतीय समाज परिवर्तनशीलता के दौर से गुजर रहा है, परम्परागत मूल्य एवं प्रतिरूप स्वतः स्थापन्न होते जा रहे है। युवा कार्यरत महिलाऐं समाज को उचित दिशा देने में, विकसित होने में सहायक सिद्ध होने के साथ ही साथ नैतिक मूल्यों के प्रतिस्थापना का भी प्रयास कर रही है।

प्रत्येक आर्थिक व्यवस्था में महिलाओं के कार्य की उपयोगिता व महत्ता विद्यमान रही है, स्वयं के रख–रखाव व मानव समाज की सदस्य होने के स्तर पर क्रियात्मक कार्यों में संलग्न है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के विकास ने महिलाओं की भूमिका को अत्यन्त सहज व परिभाषित किया है, उनके कार्य उनके पति के कार्यो की तुलना में भिन्न है, किन्तु कम महत्वपूर्ण नहीं है। भारत प्राथमिक रूप से कृषि प्रधान देश है, एवं महिलाओं का कार्यरत होना नवीन अवधारणा नही बल्कि वे सदैव पुरूषों से अलग, अनेक क्षेत्रों में कार्यरत रही है। उच्च वर्ग व मध्यम वर्ग की महिलाओं द्वारा विवाहोपरांत घर से बाहर निकलकर दुस्कर कार्यों में संलग्न होना ही एक नई अवधारणा है।

शिक्षित मध्यम वर्ग की महिलाओं द्वारा घर के अतिरिक्त कार्यालयों में कर्मचारी के रूप में कार्य करना सामाजिक परिवर्तन का द्योतक है। शिक्षित व कार्यरत महिलाओं के प्रयासों से समाज में हो रहे परिवर्तन अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि इसके साथ ही उनके नैतिक उत्थान को भी विश्लेषित किया जाता है। समाज में महिलाओं की शिक्षा एवं स्थिति समाज के विकास का प्रतीक है।[1] **मार्क्स** का विचार है कि–**"सामाजिक विकास को महिलाओं की समाज की स्थिति के अनुसार ही मापा जा सकता**

है।" स्वीडन के विद्वान Gustav Geige ने लिखा है कि "समाज में महिलाओं की स्थिति ही वह शुद्ध मानक है जो समाज के उत्थान को प्रकट करती है।"[2] **फुरीयर** के अनुसार–"महिलाओं की स्थिति के अध्ययन का अत्यन्त विस्तृत है क्योंकि यह सामाजिक परिवर्तन की दिशा निर्धारित करता है। महिलाओं की स्थिति के निर्धारक ही परिवार में आदर्शवाद का आधार है।

शहरी क्षेत्र की महिलाओं की स्थिति विशेषतः शिक्षित कार्यरत महिलाओं की स्थिति का अध्ययन अत्यन्त महत्व रखता है क्योंकि वे भारतीय महिलाओं के परिवर्तन की नब्ज को पहचानती है। **बारबरा वार्ड** ने अपने एक अध्ययन में व्याख्यायित किया है कि कार्यरत महिलाएं समाज के या तो अत्यन्त निर्धन वर्ग अथवा अत्यन्त धनाढ्य वर्ग से सम्बन्ध रखती है। उनके विश्लेषण के अनुसार निर्धन वर्ग की महिलाएं आनुपातिक रूप से अपनी आवश्यकताओं से तथा धनिक वर्ग की महिलाएं आत्म–संतुष्टि के लिए कार्यरत होती हैं।[3] किन्तु **कपूर** का मानना है कि यह वास्तविक स्थिति नही है वर्तमान में पिछले तीन दशकों की अपेक्षा मध्यम वर्ग की कार्यरत महिलाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है।[4]

अनेक महिलाएं अनेक पिताओं के समान संसार में धनोपार्जन में अपने महत्व को स्थापित करना चाहती है। कुछ महिलाएं जिन्हें पूर्व में आर्थिक वैयक्तिकता का अनुभव है वे कार्य को आर्थिक सुरक्षा के रूप में निरन्तर करते रहना चाहती है। यदि पति पर्याप्त रूप से धनोपार्जन कर आजीविका नहीं चला पा रहा है अथवा अनुपस्थित है अथवा अस्थिर है तो ऐसी स्थिति में पत्नियाँ अजीविका अर्जित करने हेतु आत्मनिर्भर हो जाती है। अन्य शब्दों में एक माँ परिवार की आजीविका अर्जन में परिवार की अक्षमता की यह भावना भारत में प्रतिदिन सुदृढ़ होती जा रही है।[5]

ललितादेवी की भारतीय कार्यरत महिलाओं पर आधारित पुस्तक 1982 में प्रकाशित हुई अध्ययन के अनुसार– कार्य करने की स्थिति में महिलाएं परिवार कार्यालय एवं समाज मे श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त कर सकती है। उसकी विभिन्न गतिविधियों से उसके स्तर की विभिन्नता को ज्ञात किया

जा सकता है जैसा कि निर्णय लेने अपनी बात कहने की स्वतंत्रता आदि।[6]

डा0 रघुनाथ रेड्डी की पुस्तक कार्यरत शिक्षित महिलाओं की परिवर्तित स्थिति में यह स्पश्ट है कि अब महिलाएं तकनीकी क्षेत्रों, चिकित्सा, अध्यापन एवम् परिचारिका के क्षेत्रों में भी प्रवेश कर रही है। वे पायलट, टैक्सी, ड्राइवर, पुलिस, राजदूत, मंत्री एवं राष्ट्र प्रमुख के रूप में भी नियुक्त हो रही है। वे आतंकरोधी सेनाओं में शामिल होकर इजराइल जैसे देशों में अत्यन्त कठिन एवं खतरनाक कार्यों में भी संलग्न है।[7]

यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका के प्रतिष्ठित राजनीतिक का कहना है कि–"समाज में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है तथा राष्ट्र के द्वारा उनकी अपेक्षा नही की जा सकती है अतः वे राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित किये जाने योग्य है।"[8]

कार्यरत महिलाओं को कार्यरत होने के साथ ही घरेलू उत्तरदायित्व वहन करने होते है। कार्यरत महिलाऐं स्वयं की संतुष्टि के लिए परिवार की आवश्यकताओं को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने हेतु कार्यरत होने की दिशा में प्रेरित होती है। इस सन्दर्भ में अत्यन्त आवश्यक है कि पतियों की प्रवृत्ति अपनी पत्नियों के प्रति सहयोगात्मक हो। शारीरिक एवं मानसिक सबलता के सापेक्ष यह सत्य प्रतीत होते है कि महिलाऐं प्रत्येक पटल पर अपनी भूमिकाओं का सन्तुष्टि दायक निर्वाह करने में सफल है। फिर भी जीवन की गाड़ी में पति पत्नी दोनों ही पहिये के समान गतिशीलता के लिए परस्पर एक दूसरे के पूरक होते है।

इस सन्दर्भ में यदि पति अति अपेक्षित होने के स्थान पर पत्नी के प्रति भावनात्मक स्नेह सम्बन्धों को सुदृढ़ करते हुए सहयोगी के रूप में कदम से कदम मिलाता है तो पत्नी भी समय की रफ्तार में पीछे नही छूटती बल्कि वह भी पति के कंधे से कंधा मिलाकर बच्चों एवं परिवार के साथ ही सामाजिक विकास की गाथा लिखने में सक्षम सिद्ध होती है।

परिवार के अन्तर्गत भी कार्यरत महिलाओं की इस नवीन भूमिका को स्वीकार कर लिया गया है अतः वे भी कार्यरत महिलाओं के प्रति सहयोग

एवं सहानुभूति का भाव व्यवहार रखते है।

कार्यरत महिलाओं का शोषणपूर्ण जीवन समाप्ति की ओर है क्योंकि वे रूढ़ियों को तोड़कर चहारदीवारी से बाहर निकल कर स्वतंत्रतापूर्वक विकास के अवसरों को चयनित कर रही है। भले ही उनके विकास की गति धीमी है किन्तु अन्ततः वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करके ही रहेंगी। आधुनिक समय में महिलाऐं बहुमुखी विकास करते हुए अपनी विभिन्न भूमिकाओं के साथ जीवन को आनन्दमयी बनाते हुए विश्वपटल पर स्थापित होने की इच्छुक है।

सन्दर्भ –

1. सिल्स, डेविड (लिमिटेड), इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंस न्यूयॉर्क, दी मेकमिल्लन कम्पनी एंड फ्री प्रेस 1968, वॉल्यूम 8 पुष्ठ 422।
2. सुलरोट इ, वीमेन सोसाइटी एंड चेंज लन्दन, वर्ल्ड यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी 1971, पेज 141।
3. वार्ड बारबरा, वीमेन इन न्यू एशिया, पेरिस यूनेस्को, 1963, सोशल चेंज इशू 1972 पेज 61।
4. प्रोमिला दी चेंज स्टेटस ऑफ वर्किंग वीमेन इन इंडिया, विकास पब्लिकेशन दिल्ली।
5. रानी कालकर, रोले कंफिलिक्ट इन वर्किंग वीमेन, चेतना पब्लिकेशन दिल्ही, 1978, पेज 162।
6. देवी ललिता, स्टेटस एण्ड एम्प्लॉयमेंट ऑफ़ वीमेन इन इंडिया, बी आर पब्लिकेशन कारपोरेशन दिल्ही 1982।
7. रघुनाथ रेड्डी, चेंजिंग स्टेटस ऑफ़ एडुकेटेड वर्किंग वीमेन, दिल्ही 1982।
8. एच् एल्थिया के, वीमेन अराउंड दी वर्ल्ड ऍन इंट्रोडक्टरी कमेंट साइंस, दी एनल्स ऑफ़ दी अमेरिकन अकादमी ऑफ़ पोलिटिकल एंड सोशल साइंस 1968, पेज 375।